वैभव लक्ष्मी व्रत कथा

एक बड़ा शहर था, जिसमें लाखों लोग निवास करते थे। पहले के ज़माने में लोग एक-दूसरे के साथ रहते थे और एक-दूसरे की मदद करते थे। ले कन नए युग के लोग एक अलग ही स्वरूप में आ गए हैं। सभी अपने-अपने कामों में व्यस्त हैं, कसी को कसी की परवाह नहीं। यहां तक क परिवार के सदस्य भी एक-दूसरे की चंता नहीं करते। भक्ति, दया, और परोपकार जैसे संस्कार कम होते जा रहे हैं। शहर में बुराइयों का आगमन बढ़ गया है; शराब, जुआ, रेस, व्य भचार, चोरी-डकैती जैसी अनेक अपराधों की घटनाएँ सामने आ रही हैं।

फर भी, कहावत है, 'हजारों निराशा में एक आशा की करण छिपी होती है।' इतने सारे बुराइयों के बावजूद, शहर में कुछ अच्छे लोग भी थे। ऐसे अच्छे लोगों में शीला और उसके पति की गृहस्थी एक आदर्श उदाहरण थी। शीला धा र्मक और संतोषी थी, जब क उसका पति ववेकी और सुशील था। दोनों ईमानदारी से जीवन जीते थे और कभी कसी की बुराई नहीं करते थे। उनका परिवार सभी के लए प्रेरणा का स्रोत था।

हालां क, कहा जाता है क 'कर्म की गति अटल होती है' और वधाता के निर्णय को कोई नहीं समझ सकता। इंसान का भाग्य पलभर में राजा को रंक और रंक को राजा बना सकता है। शीला के पति ने बुरे लोगों से दोस्ती कर ली, जिससे वह जल्दी से करोड़पति बनने के ख्वाब देखने लगा। इस लालच ने उसे गलत रास्ते पर धकेल दिया, और वह गरीबों की तरह भटकने लगा। शीला का पति शराब, जुआ, और अन्य बुराइयों में फंस गया। दोस्तों के साथ उसकी शराब की आदत बन गई, और उसने अपनी बचत, पत्नी के गहने, सब कुछ जुए में गंवा दिया। इस सबके चलते, उनके घर में दरिद्रता और भुखमरी फैल गई। सुख के दिन समाप्त हो गए थे, और शीला को अपने पति की गा लयाँ सहने के लए मजबूर होना पड़ा।

शीला, जो एक सुशील और संस्कारी महिला थी, अपने पति के बर्ताव से दुखी थी, ले कन उसने भगवान पर भरोसा रखा और धैर्य से अपने दुख को सहन कया। कहा जाता है, 'दुख के पीछे सुख और सुख के पीछे दुख आता है।' इसी वश्वास के साथ, वह प्रभु भक्ति में लीन रहने लगी। एक दिन, अचानक कसी ने उनके द्वार पर दस्तक दी। शीला सोचने लगी क इस समय उसके जैसे गरीब के घर कौन आया होगा? ले कन उसने मेहमान का सम्मान करना सखा था, इस लए उसने दरवाजा खोला। देखा, एक वृद्ध महिला खड़ी थी, जिनके चेहरे पर एक अलौ कक तेज था। उनकी आंखों में करुणा और प्यार छलक रहा था। उन पर दृष्टि पड़ते ही शीला के मन में अपार शांति छा गई।

शीला ने उस महिला को आदर के साथ अपने घर में आमंत्रित कया। उनके पास बैठने के लए कुछ नहीं था, इस लए उसने एक फटी हुई चादर पर उन्हें बिठाया। महिला ने पूछा, 'शीला, क्या तुम मुझे पहचानती नहीं?' शीला ने सकुचाते हुए कहा, 'माँ, आपसे मलकर बहुत खुशी हो रही है। ऐसा लगता है क मैं आपको बहुत दिनों से खोज रही थी।' महिला ने मुस्कुराते हुए कहा, 'क्यों? भूल गई? हर शुक्रवार को लक्ष्मी जी के मंदिर में भजन-कीर्तन होता है, मैं भी वहां आती हूँ।' शीला ने उनकी बात सुनी, ले कन पति की गलत संगत के कारण वह मंदिर नहीं जा पाई थी। उस महिला ने कहा, 'मैंने सोचा तुम बीमार हो गई हो। इस लए मैं तुमसे मलने आई हूँ।'

महिला के प्रेम भरे शब्द सुनकर शीला का दिल पघल गया, और वह उनके सामने रोने लगी। महिला ने उसकी पीठ पर प्यार से हाथ फेरकर सांत्वना दी। उन्होंने कहा, 'बेटी, सुख और दुख धूप छांव जैसे हैं। धैर्य रखो और अपनी परेशानियाँ मुझे बताओ।' शीला ने महिला से कहा, 'मेरे जीवन में सुख और खु शयाँ थीं, ले कन अचानक सब कुछ बदल गया। मेरे पति बुरी संगति में फंस गए हैं और हम अब भखारी जैसे हो गए हैं।' महिला ने कहा, 'कर्म की गति न्यारी होती है, हर इंसान को अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है। चंता मत करो, तुम्हारे सुख के दिन आएंगे। तुम माँ लक्ष्मी की भक्त हो।'

महिला ने शीला को 'वैभवलक्ष्मी व्रत' के बारे में बताया, जिसे करने से सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। शीला ने उत्सुकता से पूछा, 'माँ, यह व्रत कैसे कया जाता है?' महिला ने सरल व ध समझाई, जिसमें स्नान, स्वच्छ वस्त्र पहनना, पूजन व ध, और अन्य निर्देश शा मल थे। शीला ने व्रत करने का दृढ संकल्प लया। महिला ने कहा, 'ग्यारह या इक्कीस शुक्रवार यह व्रत पूरी श्रद्धा से करो। आ खरी शुक्रवार को खीर का नैवेद्य रखो और कुंवारी लड़ कयों को उपहार में दे दो। इस प्रकार, सच्ची श्रद्धा से यह व्रत करने से तुम्हारी सभी समस्याएँ दूर हो जाएँगी।'

इस ज्ञान को सुनकर शीला के चेहरे पर आनंद छा गया। वह इस व्रत को पूरी श्रद्धा से करने के लए तैयार हो गई।

वैभव लक्ष्मी व्रत आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुम्हारी सेवा में दिन-रात, हरि वष्णु की रचनाएँ॥
ॐ जय लक्ष्मी माता॥

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम हो जग की माता।
सूर्य और चंद्रमा तुम्हें ध्यान करते हैं, नारद ऋ ष तुम्हारे गुण गाते हैं॥
ॐ जय लक्ष्मी माता॥

दुर्गा स्वरूप निरंजनी, सुख और सम्प त्त देने वाली।
जो भी तुम्हें ध्यान करता है, ऋद् ध- सद् ध और धन पाता है॥
ॐ जय लक्ष्मी माता॥

तुम पाताल में निवास करती हो, तुम ही शुभ देने वाली।
कर्म के प्रभाव को प्रकट करने वाली, भवनि ध की रक्षक॥
ॐ जय लक्ष्मी माता॥

जिस घर में तुम निवास करती हो, वहां सब गुण आते हैं।
सभी कार्य संभव हो जाते हैं, मन में चंता नहीं रहती॥
ॐ जय लक्ष्मी माता॥

तुम्हारे बिना यज्ञ नहीं होते, कोई वस्त्र नहीं पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुम्हारे द्वारा मलता है॥
ॐ जय लक्ष्मी माता॥

शुभ गुणों से भरा मंदिर, क्षीरोद ध से उत्पन्न।
चौदह रत्न तुम्हारे बिना, कोई नहीं पाता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता॥

जो भी महालक्ष्मी जी की आरती गाता है,
उसके हृदय में आनंद समाता है, पाप भी मट जाता है॥
ॐ जय लक्ष्मी माता॥

वैभव लक्ष्मी मंत्र

या रक्ताम्बुजवा सनी, वला सनी चंद्रांशु की तेजस्विनी।
या रक्त-रु धराम्बरा, हरिसखी, या श्री मनोल्हादिनी।
या रत्नाकर मंथन से प्रकट हुईं, वष्णु की स्वयम् गृहीन।
वह मुझे पातु, मनोरमा, भगवती लक्ष्मी, पद्मावती।

.....

यत्राभ्याग वदानमान चरणं प्रक्षालनं भोजनं
सत्सेवां पतृ देवा अर्चनम् व ध सत्यं गवां पालनम

धान्यांनाम प सग्रहो न कलहश्चिता तूरूपा प्रया:
दृष्टां प्रहा हरि वसा म कमला तस्मिन ग्रहे निष्फला: